20 मनोहरपुरी की सीमा पर

गोवर्धनराम त्रिपाठी

(जन्म : सन् 1855 ई. : निधन : सन् 1907 ई.)

गोवर्धनराम त्रिपाठी का जन्म गुजरात के नडियाद शहर में हुआ था। वे मुंबई यूनिवर्सिटी के प्रारंभिक स्नातकों में से एक थे। एल.एल.बी करने के बाद मुंबई में वकालत आरंभ किया और एक सफल वकील के रुप में ख्याति पाई। साहित्य सर्जन के प्रति उनका गहरा लगाव था।

'सरस्वती चन्द्र' उपन्यास गुजराती भाषा की उत्तम रचना है, जो चार खण्डों में विभाजित है और लगभग सभी भारतीय भाषाओं में अनूदित है। इसके अलावा 'स्नेहमुद्रा', 'लीलावती जीवन कला', 'दयाराम का अक्षर देह', 'नवलराम की जीवनकथा' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। उनकी निजी डायरियाँ मरणोपरांत 'स्क्रैप बुक्स' नाम से प्रकाशित हुई हैं।

प्रस्तुत उपन्यास अंश 'मनोहरपुरी की सीमा पर' 'सरस्वती चंद्र' के दूसरे खण्ड से लिया गया है। यहाँ ऐतिहासिक नगरी मनोहरपुरी की सीमाओं का प्राकृतिक, आलंकारिक एवं मनोहारी वर्णन के साथ आगे बढ़ती कथा वाचक को अपनी ओर आकर्षित करती है।

मनोहरपुरी सुवर्णपुर से लगभग दस कोस दूर है। प्राचीन काल में वह एक महान नगरी थी। विद्वान, स्वतंत्र और प्रतापी राजाओं की राजधानी थी। काल के प्रताप से उन राजाओं को म्लेच्छों ने जीत लिया और मनोहरपुरी की अवनति होने से वहाँ पर अब मात्र एक गाँव रह गया और मनोहरियु, मनोरियु आदि क्षुद्र नामों से जाना जाने लगा। आज यह गाँव रत्ननगरी राज्य के प्रदेश में है, और इतिहासपूजक बुद्धिवाले विद्याचतुर को वह प्रिय होने से उसकी सविशेष देखभाल की जाती है। विद्याचतुर का जन्म भी इसी गाँव में हुआ था। दूसरे अन्य बहुत से कारणों से भी यह गाँव उसे प्रिय लगता था। विद्याचतुर का मौसियान और गुणसुंदरी का मायका इसी गाँव में होने से तथा बाल्यावस्था और युवावस्था का प्रारंभिक काल इस दंपति द्वारा इसी गाँव में व्यतीत करने से, मनोहरपुरी दोनों को मनोहर लगती और 'मनोहरपुरी' नाम का उन्होंने जीर्णोद्धार किया था।

सर्व कृत्रिम वैभव नष्ट होने पर भी ईश्वर-प्रदत्त सुंदरता इस गाँव को छोड़कर नहीं गई थी और इस तथा दूसरे कई कारणों से बहुत से लोगों को यह स्थल परिचित और प्रिय था। सुवर्णपुर, रत्ननगरी और अंग्रेजी राज्य-इन तीनों के अधिकार क्षेत्र का यह केन्द्रबिंदु था और तीनों राज्यों के सीवान मनोहरपुरी के सीवान के साथ मिलते थे। इन राज्यों तथा ईश्वर रचना के सीवान का भी वह केन्द्रबिंदु था। पश्चिम में आधे कोस की दूरी पर समुद्र था, इसलिए पश्चिमी पवन की लहरें शीतल तथा रमणीय होकर गर्मी की दु:सहता को मनोहरपुरी से दूर रखती थीं। उत्तर में सुंदरगिरि नामक छोटे किंतु सुंदर पर्वत का आरंभ होता। दूसरे दोनों ओर बड़े वन थे। पूर्व में आम का वन, अतिविस्तृत असंख्य बरगदों की घटाएँ, गन्ने के खेत आदि से इस छोटे गाँव की दृष्टिसीमा रुंध गई थी। ऊँचे और सूखे-हरे ताड़ के जंगल दक्षिण दिशा में सुंदरता की ध्वजाओं की तरह फहराते थे और उनके लंबे और कटे-फटे पत्ते, पट्टीवाले ध्वजपट से अलग न थे। भद्रा नदी की सुभद्रा नामक शाखा पूर्व से दक्षिण में आकर टेढ़ी-मेढ़ी गति से चलती हुई सारे वनों के पत्तों तथा फल-फूलों को अपनी छाती पर बहाते-बहाते, मंद किंतु स्थिर मंद-मधुर स्वर करती-करती मूल के पास आकर समुद्र में मिलती थी। इस नदी के कारण ताड़ वन में दूसरी वनस्पतियाँ भी गुँथ गई थीं। चैत्र के इस शुक्ल पक्ष के समय में उतरते वसंत तथा आनेवाले ग्रीष्म की संधि होती थी, उस समय सुरंगित बौर तथा सुवासित टिकोरों से भरा आम्रवन और ज्वारीय समुद्र मनोहरपुरी के पूर्व-पश्चिम की सुंदरता को तराजू में तौल जाते थे।

सुवर्णपुर से निकलनेवाला रास्ता नदी की तरह आम और ताड़ के वनों को अलग कर दोनों के बीच से गुज़रता था और मनोहरपुरी की ओर मुड़ता था।

चारों ओर के वनों में छिपी संध्या जब भयमात्र त्यागकर बाहर निकल पड़ी, गोलाकार सूर्य को ताड़ के वन के पीछे लुढ़का दिया और उस ज्योति का तेज अस्त होते-होते भी ऊँचे ताड़ पर टिका हुआ दिखाई दिया, तब संध्या के कारण शीतल बनी सड़क पर एक बैलगाड़ी घिसटती चल रही थी और विश्राम-स्थल पास आया जानकर थके हुए बैलों को जोश आ रहा था। यह वही बैलगाड़ी थी जिसमें बैठकर सरस्वतीचंद्र निकला था।

बैलगाड़ीवाला भी वही था, किंतु भीतर सरस्वतीचंद्र अथवा उसके साथ का कोई भी आदमी नहीं था। मात्र बैलगाड़ी के साथ चल रहा दंडी संन्यासी अंदर चढ़ बैठा था। घटित घटना को न समझने वाले बैलों के सिर पर मात्र इन दोनों का बोझ था।

बैलगाड़ीवाला और संन्यासी हँसी-मज़ाक करते हुए गप्पें मार रहे थे और बैलगाड़ी चरमराती-चरमराती दो वनों के बीच के खाईं जैसे रास्ते पर दौड़ती-सी चल रही थी। संन्यासी के हाथ का दण्ड निर्भय स्थिति में बैलगाड़ी के पांजर पर औंधा पड़ा था और आकाश की ओर उसकी ताकती नोक रक्तरंजित थी। बैलगाड़ीवाला स्वस्थ था किंतु संन्यासी के मन में कोई शंका हो, इस तरह उसकी आँखें सावधान रहने का प्रयत्न करती हुई चारों ओर पुतलियाँ घुमा रही थीं।

सुवर्णपुर से जो तीन सवार बैलगाड़ी के पीछे चल रहे थे, वे इस समय दिखाई नहीं दे रहे थे। सरस्वतीचंद्र को जाता हुआ देख कुमुदसुंदरी को बुलाने आए हुए सवारों में से तीन जनों को कुछ सूचना देकर सरस्वतीचंद्र के पीछे भेजा था। अब्दुल्ला, फतेहसंग और हरभमजी उन तीन सवारों के नाम थे।

बैलगाड़ी चली तब उसके आगे जो आवाज़ तथा हुँकारी आ रही थी, वह अब शांत हो गई थी और वह स्थल बैलगाड़ी कभी की पार कर चुकी थी। आम्र-वन अंग्रेजी राज्य में था। ताड़-वन सुवर्णपुर के राज्य में था, और दोनों के बीच के रास्ते का मुख मनोहरपुरी के क्षेत्र में था। उस सीवान में, एक रास्ता पूर्व-पश्चिम की ओर जाता था और वहाँ दक्षिण ओर का बंद रास्ता मिल जाता था। तीन दिशाओं के मार्ग मिलते थे, वहाँ पर यों तिराहा बनता था। गाड़ी तिराहे के पास आकर रुकी, उस समय अंधकार आकाश से उतर पड़ा और रात्रि भी विश्व से भेंट पड़ी। चंद्रमा झाँककर चला गया।

तिराहे के बीच में बरगद का एक वृक्ष था। उसके नीचे बैलगाड़ीवाले ने संन्यासी की इच्छा से बैलों को खोला और दोनों जन अंधकार में गुपचुप बातें करने लगे।

बैलगाड़ीवाला, ''ठाकुर! अब मुझे जाने दो। इस तिराहे में तिगुना भय, तुम तो मुक्त हो, पर मेरा तो घर-बार जाएगा!''

संन्यासी, ''अबे चुप, चुप! उस हरभम की मार से मेरे दाहिने पैर की हड्डी दुख रही है, मुझसे चला नहीं जाएगा और मुझे आम्रवन के उस पार वीरपुर जाना है; तेरी गाड़ी के बिना वहाँ नहीं पहुँचा जा सकता है।''

बैलगाड़ीवाला, ''तो वीरपुर में कौन बाप तुम्हें रखनेवाला है? खाचर राणा तुम्हें और मुझे दोनों को बंदी बनाकर सौंप देगा।''

संन्यासी, ''भैया! देखा नहीं अभी सुरसंग का हाथ। ये हाथ आज भूपसिंह की गद्दी को हचमचा रहे हैं और बुद्धिधन को रतजगा करवाते हैं। दो दिन में देखा नहीं जो उथल-पुथल की है उसने?''

बैलगाड़ीवाला, ''तब वीरपुर जाकर क्या करोगे?''

सुरसंग, ''राणा खाचर की हम पर बड़ी कृपा है। तुझे उनकी ओर से डर नहीं रखना है। सरकार से वह चाहे जो बोलेगा, काग़ज़ में चाहे जो लिखेगा, किंतु सुरसंग का बाल बाँका नहीं होने देगा।''

बैलगाड़ीवाला, ''तब बनिया-ब्राह्मण जो गाड़ी में बैठे थे, उनका क्या करोगे?''

सुरसंग ने इस प्रश्न का उत्तर टाल दिया, इतने में दूर अंधकार में बिगुल बजा। उत्तर में सुरसंग ने सियार जैसा विचित्र स्वर निकाला। थोड़ी देर में कुछ पद-चाप सुनाई दी। सुरसंग बरोह के मुँह के सामने खड़ा रहकर चिलम फूँककर उसमें से लपट निकालने लगा, कुछ और आदमी आए उन्हें साथ लेकर वृक्ष के नीचे मूल जगह पर आकर पुनः बैठ गया। आगंतुकों में से एक आदमी बैलगाड़ी को लेकर आने-जानेवाले आदमियों की निगरानी करने के निमित्त बरोह के पास जा बैठा। तब बाग़ी अंतःकरण की बात कहने लगे।

उनके पास अब कोई पराया आदमी नहीं रहा। मात्र सबके सिर पर डालियों की पत्तियों में कोई बैठा हो, ऐसी खड़खड़ाहट हुई। सुरसंग ने चिलम सुलगाकर ऊपर देखा, कान लगाया किंतु तुरंत ही पुनः बातों में लीन हो गया।

चिलम में जब आग जली तब ऊपर की डालों में उस तेज का प्रतिबिंब पड़ता हो यों जुगनू के पंखों की तरह प्रकाश स्पष्ट होता था, किंतु उस पर किसी का ध्यान नहीं गया, और चारों ओर के अंधकार की तरह निष्कंटक परंतु हवा से हिलते ऊपर के पत्तों की आवाज़ की तरह धीमे स्वर से बाग़ियों की कहानी का रस चुपचाप कर्णोपकर्ण जमने लगा।

अनुवाद : डॉ. वीरेन्द्र नारायणसिंह

शब्दार्थ और टिप्पणी

अवनति अधोगति **मौसियान** मौसी का घर **जीर्णोधार** मरम्मत कार्य **सीवान** सीमा **टिकरों** मंजरी, आम के फूल **ज्वार** भरती, उबाल **दंडी संन्यासी** हाथ में दंड लेकर भ्रमण करनेवाला साधु **चरमराती** चरमर शब्द होना **पुतलियाँ** आँखें, कीकी **तिरहा** जहाँ तीन रास्ते मिलते हो वह स्थान **रतजगा** जागरण **बिगुल** रणभेरी **लपट** ज्वाला **बरोह** वडवाई, बरगद पेड़ की ऊपर से नीचे तक फैली लड़ियाँ **बाग़ी** विद्रोही, अपने अधिकार के लिए बग़ावत करने वाला

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर दीजिए :

(1) मनोहरपुरी को किसने जीत लिया?
(क) हूणों ने (ख) द्रविड़ों ने
(ग) म्लेच्छों ने (घ) आर्यों ने

(2) बैलगाड़ी दो वनों के बीच से कैसे चल रही थी?
(क) धीरे-धीरे (ख) लड़खड़ाती
(ग) तेजगति से (घ) चरमराती

(3) सरस्वतीचन्द्र के पीछे सवारों को किसने भेजा था?
(क) कुमुदसुन्दरी (ख) गुणसुन्दरी
(ग) विद्याचतुर (घ) बुद्धिधन

(4) ''तिराहे में तिगुना भय है'' यह वाक्य कौन बोलता है?
(क) संन्यासी (ख) सुरसंग
(ग) सरस्वतीचंद्र (घ) बैलगाड़ीवाला

(5) अंधकार में बिगुल बजने पर सुरसंग ने कैसा विचित्र स्वर निकाला?
(क) सियार (ख) भालू
(ग) शेर (घ) कुत्ते

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) मनोहरपुरी सुवर्णपुर से कितनी दूर है?
(2) मनोहरपुरी का सीवान किन तीन राज्यों के सिवान से मिलता था?
(3) बैलगाड़ी के पीछे भेजे गए तीन सवारों के क्या नाम थे?
(4) बैलगाड़ीवाले ने बैलों को कहाँ खोला?
(5) भूपसिंह की गद्दी कौन हचमचा रहा था?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

(1) किन कारणों से मनोहरपुरी लोगों को प्रिय थी?

(2) मनोहरपुरी गाँव की दृष्टिसीमा कैसे रूँध गई थी?

(3) सुवर्णपुर का रास्ता मनोहरपुरी की ओर कैसे मुड़ता था?

(4) सुरसंग ने राजा खाचर के प्रति श्रद्धा किन शब्दों में प्रगट की?

(5) चिलम की आग का प्रकाश कैसा स्पष्ट होता था?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) विद्याचतुर ने मनोहरपुरी का जीर्णोद्धार क्यों किया?

(2) भद्रानदी की सुभद्रा शाखा समुद्र में कैसे मिलती है?

(3) बैलगाड़ी कहाँ से गुजरी और तिराहे पर क्यों रुकी?

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

तुम तो मुक्त हो, पर मेरा तो घर-बार जाएगा।

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्ति : सरस्वतीचन्द्र उपन्यास का दूसरा खण्ड पढ़िए।

(2) शिक्षक प्रवृत्ति : छात्रों को सरस्वतीचन्द्र फिल्म दिखाइए।

⊙